राष्ट्रीय कार्यकारिणी में श्री अटल बिहारी वाजपेयी का भाषण

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा कि यह ऐसी बैठक हो रही है, जिसमें प्रमोदजी नहीं है। उनकी याद हम सभी को आती रहेगी। वह इसलिए कि उनके लिए पार्टी सर्वोपरि थी, शेष सब कुछ गौण था। यदि संगठन की दृष्टि से उन्हें एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर भेजने का फैसला होता था, तो उन्होंने उसे सहर्ष स्वीकारा। इससे संगठन का बल बढ़ा और परस्पर स्नेह भी।

श्री वाजपेयी ने कहा कि अभी हमारे अध्यक्ष महोदय कल की घटना जो यात्रा से जुड़ी है, का उल्लेख कर रहे थे। मैं बीच में चला गया था, मुझे चिंता हुई। अध्यक्षजी को नाराज होने का पूरा अधिकार था लेकिन जाना मेरी भी मजबूरी थी। जिस वातावरण की हम सृष्टि करते हैं, उसमें अगर अंतःकरण की भावना ईमानदारी के साथ प्रगट नहीं कर सकें तो समझना चाहिए कि कहीं कोई कमी है।

अटलजी ने आगे कहा कि कई प्रदेशों में हमारी सरकारें हैं। हम पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। कम्युनिस्ट पार्टी किस तरह से अपनी गति बढ़ा रही है। यह सच है कि हम हुबहु उनकी नकल तो नहीं कर सकते, पर हां हमें पुनः सरकार में आने की बात समझनी चाहिए। दोबारा सरकार में आना बहुत कठिन परीक्षा है। हम लाख कहें कि हमने एनडीए सरकार में अच्छा काम किया और इसमें कोई शक नहीं कि हमने अच्छा काम किया था पर कहीं न कहीं कोई कमी रह गई थी। लोगों ने काम को सराहा पर चुना नहीं। जिन प्रदेशों में हमारा राज है, वहां फिर से राज बने यह संकल्प हम सभी को लेना है। हमें इसकी योजना भी बनानी चाहिए।

उन्होंने आगे कहा कि कुछ राज्यों में हम दूसरे दलों के साथ मिलकर सरकार चला रहे हैं। अपनी शक्ति न घटाते हुए मिलीजुली सरकार की ताकत बढाना कठिन काम है। हमें इस पर विचार करना चाहिए।

श्री वाजपेयी ने कहा कि अभी कर्नाटक की चर्चा हो रही थी। अपने सदस्यों की संख्या के बल पर हम सरकार चला रहे हैं। उन्होंने कहा कि बाहर का कभी कोई संकट नहीं बन सकता। हम संकट को अवसर में बदलने की क्षमता रखते हैं। उन्होंने कहा कि अवसर सिर्फ अवसर न रहे हमें समझना चाहिए कि हममें कोई न कोई कमी रह गई। कोई कारण नहीं है कि हम सरकार चला न पाएं। अपने दलों को चलाना व्यवहार कसौटी पर कसा जाता है। एक दूसरे के प्रति हमारा व्यवहार कैसा हो। यह बात तय करती है कि हम कैसे लोगों को साथ लेकर चलें।

श्री अटलजी ने आगे कहा कि पार्टी छोड़कर लोग जा रहे हैं। उनकी संख्या ज्यादा नहीं है पर जा रहे हैं। चिंता की बात है। हम आघात को सहन करने को तैयार हैं, यदि दूसरा कोई रास्ता नहीं है तो, लेकिन आदमी को खो देना एक बड़े घाटे की

बात है। इसलिए मैंने जैसा कहा कि परस्पर स्नेह, सहयोग मिलकर चलने की तैयारी बहुत आवश्यक है। जो कठिनाइयां आयेंगी हम सामना करेंगे।

मैंने अध्यक्षजी को दो दिन से बैठक चलाते देख रहा हूं। जिस तरह उन्होंने बैठक चलाया है उसे देखकर मुझे विश्वास हो गया है कि अध्यक्षजी सबको साथ लेकर चलने की क्षमता रखते हैं। हम अपना–अपना कर्तव्य निभायें। हम यहां से उत्साह, नई स्फूर्ति लेकर जाएं। बदली हुई परिस्थिति में हम अगर अपने कर्तृत्व एवं परिश्रम से अपने अनुकूल और परिवर्तन ला सकें तो निश्चित रूप से भारत का भविष्य सुनहरा होगा।